अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि तथा प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना -:

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है | अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे प्रदत्तों के विश्वसनीय समाधान ज्ञात किये जाते है | इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है, न्यादर्श जितने अधिक सुदृढ़ होंगे, शोध के परिणाम भी उतने ही विश्वसनीय होंगे | अनुसंधान प्रश्न करना, गहन जांच करना, निरीक्षण करना,योजनाबद्ध अध्ययन व्यापक परीक्षण और तत्परता युक्त उद्देश्य सामान्यीकरण प्रक्रिया समाहित होती है |

पी.बी.युग के शब्दों में:-

"अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिसके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है | तथा उन अनुक्रमों पारस्परिक सम्बन्धो,कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्रकृति नियमों का अध्ययन किया जाता है, जो कि तथ्यों को निर्धारित करते है |"

मेकग्रेथ तथा वाटसन के शब्दों में:- " अनुसन्धान एक प्रक्रिया है,जिसमे खोज प्राविधि का प्रयोग किया जाता है जिसके निष्कर्ष की उपयोगिता हो, ज्ञान वृद्धि की जाये प्रगति के लिए प्रोत्साहन करे, समाज के लिए सहायक हो तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके | समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याएं प्रभावशाली ढंग से हल कर सके"|

3.2 शोध विधि :-

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालयों में चलाये जा रहे मूल्यांकन में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के उनके विभिन्न विषयों में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना है | अतः इस कार्य हेतु प्रश्नावली अनुसूची प्रणाली का चयन भोपाल जिले के सी.बी.एस.ई विद्यालयों में किया गया जिसमे

पहला :- केंद्रीय विद्यालय स्थान बैरागढ़ (भोपाल)

दूसरा :- केंद्रीय विद्यालय क्र.-1 स्थान मैदा मिल (भोपाल)

3.3 न्यादर्श का चयन :-

न्यादर्श पद्धति अनुसन्धान कि वह पद्धति है जिसमे अनुसंधान विषय के अंतर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या से सावधानी पूर्वक कुछ इकाइयों को चुना जाता है जो सम्पूर्ण जनसंख्या की विषेशताओं का प्रतिधिनित्व करती है |

पी.वी.यंग के अनुसार:-

"वह समस्त समूह जिसमे से प्रतिदर्श का चयन किया जाता है, उसे जनसंख्या समग्र या पूर्ति कहते है |

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने न्यादर्श विधि से किया है| इसके अन्तर्गत भोपाल जिले के सी.बी.एस.ई.के अन्तर्गत आने वाले दो केंद्रीय विद्यालय इनमे से २१ शिक्षकों का चयन मूल्यांकन में आने वाली समस्याओं के अध्ययन के लिए किया गया है |

न्यादर्श का वर्गीकरण

न्यादर्श - 21 विद्यालयीन शिक्षकों का वर्गीकरण

केंद्रीयविद्यालय बैरागढ़	केंद्रीयविद्यालय क्र.-1 मैदामिल	कुल योग
शिक्षक	शिक्षक	
15	6	21

3.4 उपकरण एवं तकनीक :- किसी भी शोधकार्य के लिये उपकरण का होना आवश्यक है | शोध कार्य में उपकरणों का बहुत अधिक महत्व होता है | क्योकि उपकरणों के माध्यम से ही निष्कर्षों की विश्वसनीयता आधारित होती है | उपकरण का चयन सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह न किया जा सके | प्रस्तुत शोध में प्रदत्त का संग्रह करने के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली अनुसूची उपकरण के रूप में उपयोग किया गया |

3.5 प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया :-

शोध उपकरणों के प्रशिक्षण के लिये 10 दिन का समय निश्चित किया गया है | शोधार्थी द्वारा 8 अप्रैल से 18 अप्रैल के दौरान सर्वेक्षण विधि से किया गया | शोधार्थी ने प्रपत्रों की पूर्ती स्वयं विद्यालय में जाकर दोनों विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं उप प्रधानाचार्य के साथ मौखिक चर्चा करने के बाद विभिन्न विषयों के शिक्षकों से व्यक्तिगत संपर्क द्वारा प्रत्येक शिक्षकों को प्रश्नावली अनुसूची प्रारूप दिया गया, जिसके लिये भोपाल जिले के दो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विद्यालयों का चयन किया गया| प्रदत्तों के संकलन के लिये क्षेत्रीय शिक्षा संसयान द्वारा एक समय सीमा निर्धारित की गयी थी |

3.6 शोध प्रश्न :-

(i) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को क्या समस्याएं आ रही है |

(ii) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को उनके विभिन्न विषयों में क्या समस्याएं आ रही है |

(iii) केंद्रीय विद्यालयों में शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में उनके विषयों में क्या समस्याएं आ रही है|

प्रदत्त विश्लेषण योजना :- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने गुणात्मक विधि का प्रयोग करते हुये शोध में दिए गए प्रदत्त का विश्लेषण किया